प्रतिवेदन के स्वर

श्री शम्भूदयाल सक्सेना



नवयुग-ग्रन्थ कुटीर
बीकानेर

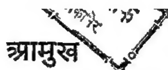
प्रकाशक :
नवयुग ग्रन्थ कुटीर
बीकानेर

प्रथम मुद्रण
सन् १९६४

मूल्य
चार रुपया

आवरण शिल्पी
मायाराम गोस्वामी

मुद्रक :
एज्यूकेशनल प्रेस
बीकानेर



आमुख

'प्रतिवेदन के स्वर' मे इस युग की रचनाए हैं,— यह युग जो गत महायुद्ध के बाद से आरभ होता है। इसमें जीवन के मूल्य बडी तेजी से बदले हैं। मनुष्य और उसके रहन सहन, राज्य और समाज की विधि व्यवस्थाओ, मे जितना परिवर्तन इस काल में आया है उतना शायद ही कभी आया हो। आकाश की उल्काओ की तरह क्षणक्षण मे सत्ताधरों का प्रकाश जलता बुझता रहा है। कला और साहित्य मे उसका प्रतिबिम्ब झलकना स्वाभाविक है। नई विधाओ ने उसी त्वरा के साथ साहित्य और कला मे प्रवेश किया और अधिकार जमाया है। पुरातन ने नूतन के लिए मार्ग छोडा है और जाते जाते उसे अपना आशीर्वाद दिया है और साथ ही यह सकेत भी करता गया है कि वह अपने पीछे आनेवाले नये युगो की धारणाओ के प्रति वैसा ही उदार बना रहे। मोह-ममत्व के बधन मे अपने आपको बँधने न दे। निर्लिप्त भाव से आगत का स्वागत करने के लिए तत्परता दिखाये।

युगधर्म के प्रति सचेष्ट पाठक पूर्व तैयारी के बिना भी सहज भाव से इस सदेश को आत्मसात कर सके हैं। परपराओ के मोहजाल ने उन्हे विभ्रमित नही किया है। प्रगति प्रवाह में जो प्रखर वेग उमडा है कण कण जैसे उसी की राह देख रहा था। कुछ भी असमावित नही। कुछ भी अपूर्व नही नियति-नियामक के रथ-चक्र की आराओ के साथ घूमता हुआ वह उसी समय और उसी रूप में आया जैसा उसके लिए सृष्टिविधान था। इस युग का काव्य वर्ण्यवस्तु, वर्णन और छन्द सभी ओर से निबन्ध

होकर आगे बढा है तो भी किसी को शिकायत नहीं हुई है। कवि का प्रतिवेदन जीवन का प्रतिवेदन है, युग का प्रतिवेदन है। उसे वाणी देने मात्र का काम उसका है जो उसने यदि पूरी ईमानदारी से किया है, उसे रहस्य में खो जाने नहीं दिया है तो उसने कतव्य का निर्वाह करने में कोई कसर नहीं रक्खी है। अब उसे सुनना और समझना लोकजीवन का काम है।

बीकानेर
१७ मार्च १९६४

शम्भूदयाल सक्सेना


प्रतिवेदन के स्वर

अनुक्रम

१	मूल्यांकन	३
२	अंतरिक्ष यात्रा	५
३	स्तालिन : एक अभिव्यक्ति	६
४	बगुला	१२
५	तस्कर	१६
६	अजगर और चांद	२२
७	भाषा विवाद	२४
८	कगार	२७
९	पनघट	३२
१०	मिथ्याचार	३७
११	नाला	४०
१२	नफा नुकसान	४४
१३	लोकतंत्र	४९
१४	आश्वासन	५४
१५	भावात्मक एकता	५८
१६	ये उल्लू, यह चांदनी रात !	६३
१७	नई कविता	६६
१८	एक किरण	६९
१९	दो बहनें	७०
२०	अतीत स्मृतियां	७४
२१	वियोगिनी	७६
२२	बच्चन कवि	७८
२३	प्रतिदान	८०

२४	उर्वशी और दिनकर	८२
२५	स्वप्न-पाक्य	८४
२६	चेतावन	८८
२७	चीन की मृत्यु पर	९१
२८	सेना को हुकार	९४
२९	हिन्द की सेना	९५
३०	भारत एक परिचय	९६
३१	रणागण मे	९८
३२	स्वागत, युद्ध !	१००
३३	स्वर्ग का आदर्श	१०१
३४	हेमरशोल्ड	१०४
३५	गुटर गू	१०७
३६	कैनेडी के निधन पर	११०
३७	कवि और काव्य	११२

प्रतिवेदन के स्वर

मूल्यांकन

जीवन की रंगीनियां
सांस्कृतिक कार्यक्रमों के
रंगारंग विधान में,
प्रस्तुत करती हैं
रीतिकालीन कवियों की
रूपाजीवी मनोवृत्तियां
केवल उस झीने पर्दे को हटाकर
जो राधाकृष्ण की युगल मूर्ति के प्रति भक्तिभावना का
आडंबर बनाये थीं।

रामनामी दुपट्टे के भीतर
घूँघट में,
दो कजरारे बांके नयन
उसी पुरानी शराब को
नई बोतलों में
नये लेबिलों के साथ पेश करते हैं।
यह एक विडम्बना है
कि हम उसकी निन्दा करते हैं
और इसे सबके गले उतारने के लिए
जिहाद के नारे लगाते हैं!

अब भी
उतनी ही रहस्यमय हैं
जितनी चिन्तनशील उपनिषद्कार महर्षियों के समय थीं !
कार्ल मार्क्स, बेचारा,
उन गहराइयों में झांकने से
डरता ही रहा, डरता ही रहा,
मानव हाड मांस का पुतला
एक अद्भुत त्रिकोण है !
अध्यात्म,
इतिहास और
अपर प्रवृत्तियों के कोणों में
कोई समकोण नहीं।



अन्तरिक्ष यात्रा

युग युगों से अन्तर मन मे
जग रही थी आकांक्षा बडी
अन्तरिक्ष के सीमाहीन नीलोदधि मे
कौन कौन से रहस्य छिपे हैं इस सृष्टि के ?

पक्षियों के पखों की कल्पना पर
जीवन के प्रथम प्रभात से
मन मयूर भरता रहा उडानें
अहरह ।
अन्तरिक्ष-यानों की कथाओं का जन्म
कला और साहित्य में
दुनियां की सभी जातियों मे,
सभी देशों मे,
पहले दिन से ही हुआ था ।

सभ्यता की प्रगति के इतिहास के
हर पृष्ठ पर
यह अदम्य आकांक्षा
सजीव बनी रही ।
प्रयत्नों ने न मानी हार,
लगा रहा अनवरत
अन्तरिक्ष भेदन में

मानव,
नित्य मिलता रहा
निमंत्रण उसे अनंत नीलाकाश से ।
धरती पर डोलता भी,
कार्य व्यस्तता के बीच
बिना पंखों का प्राणी,
आकुल हृदय से विचरता कहीं और रहा ।

जीवन और मरण की समस्याएं,
मरणोत्तर दुनिया की गुत्थियां,
उलझीं परंतु सुलझीं नहीं
काल के विशाल पट पर
गहरी खुदी हैं ये रेखाएँ
चिंता की सलवटें
भाल पर उभर उभर
कहती कहानी उस जीवन की,
जिसमें
राख में ज्यों स्फुलिंग
दबा घना रहता सजीव ।

सतत असंभव विचार हुआ संभव,
कठोर धरा छोड़
उड़ा मानव गगन में ।
खुल गये कपाट उस अगम्य अंतरिक्ष के,
महती संभावनाओं की झांकी के साथ
एक अद्भुत गुरुता क्षण
आसमानी आवरण में

जीवन की नई कथा
नई व्यथा,
नये उपाख्यान
नये अध्याय,
लेकर हुआ प्रस्तुत दीपित क्षितिज पर ।

गागारिन, शेपड, ग्रिसम ने,
टीतोव ने,
प्राणों की बाजी पर
अजेय अन्तरिक्ष में प्रवेश कर
मानव की विजय के सुनहरे लेख
शून्य अवकाश की
आकारहीन भित्तियों पर
शाश्वतता की अमिट स्याही से,
लिखकर यशार्जन किया महान ।

गम्य अन्तरिक्ष,
स्वप्न सत्य,
निस्सीम विस्तार
निबल सशक्त जीवधारियों को अनायास ।
अनादि औ अनन्त सृष्टि
मुक्त आज,
केवल समय की बात शेष
जब जीवन धरित्री का
ग्रहों, नक्षत्रों में उगायेगा
नस्लें नई नई ।

अन्तरिक्ष यात्रा में
जाति, धर्म, राष्ट्रवाद के
मील के पत्थर
काम नहीं देंगे।
नये मापदंडों की होगी सृष्टि,
नया समाजवाद उस विस्तृत जगत् में
एक नीहारिका बना घूमता रहेगा
भविष्य के नभोमंडल में
शत सहस्र युगों पर्यन्त
एक नूतन अकल्पनीय सत्ता का
होने को है जन्म शीघ्र।

अन्तरिक्ष यात्रियो,
परम्परागत विश्व की भाषाओं में
क्या तब तुम्हें स्वाद आयेगा ?
अजाने अबूझे जीवन सत्य से
क्या बनेगा, क्या बिगड़ेगा ?
इसको सोचना भी क्या तुम्हारे लिए व्यर्थ होगा ?
महामहिम, तुम कितने
अतीत के रहोगे, कितने भविष्यत् के ?
कैसा यह वर्तमान होगा
कभी सोचा है तुमने ?



स्तालिन एक अभिव्यक्ति

लौहपुरुष स्तालिन,
युग सृष्टा सोवियत संघ के शिल्पि प्रवर !
लेनिन के साथी, सहधर्मी,
मार्क्सवाद के स्तम्भ सुदृढ़,
आदेश और इंगित जिनके थे
स्वतः सिद्ध प्रमाण,
अतर्कित तर्क
खण्डन मण्डन से परे
अप्रतिहत दीप्ति बिन्दु व्यक्तित्व !

उठी जो उँगली कटकर गिरी
आँख फूटी
सिर उतर गया तत्काल,
गुट टूटे, षड्यन्त्र विफल
दर्प विदलित,
विश्वास विदीर्ण
दमन का अभिनव चक्र
चला, शमन हो गये
विरोधी तत्व,
बुर्जुआ,
फासी,
नात्सी वस्तु,

पथमार्गी,
सम्राजी,
पूंजीवाद परक
व्यक्तिवादी,
दक्षिण पथी
नाना रूपों नामों के जनशत्रु
केवल इगुश से राष्ट्र
वामपक्षी
बुलारिन, जिनोवीव से शत शत भ्रष्ट पुरुष !
तुम्हारी कृपा कोर से
संख्यातीत नर मुण्डों के मालय मे
अगणित कामरेडों को भी मिला स्थान
विद्रोही किसानों,
असंतुष्ट श्रमिकों,
स्वाधीनचेता बुद्धिवादियों,
आलोचक वज्ञानिकों,
विदेशों मे प्रशंसित कलाकारों
संदेहशील लेखक
अध्यापकों, छात्रों क दुर्भाग्य के साथ !

ऐसे अभूतपूर्व महायज्ञ के दुर्दान्त
होता क रूप म अमर महान स्तालिन !
आज तुम्हारे क्रूर फौलादी व्यक्तित्व के प्रति
जगती है सहानुभूति,
करुणा विगलित मानव हृदय मे ।
जब तुम्हारा नाम
कपता है उसी भाग्य डोर म
जिसमे सभ सस लोग

तुम्हारे रुद्र इंगित पर
बाघ पर झुका दिये गये थे
प्रमलिन व पीड़ित
इतिहास के अंधेरे गर्त में !

सोवियत सघ से तुम्हारी
लाखों लाख मूर्तियां
जब तोड़ी और हटाई जा रही हैं
तुम्हारा नाम इतिहास के पृष्ठों से
मिटाया जा रहा है नि शेष किया जा रहा है,
तब तुम विश्व मानव के
भग्न हृदय में,
जिसे तुमने निर्ममता से
कुचला था, जनवाद के नाम पर,
अग्निमय दृष्टि से निरन्तर जलाया था,
बड़ी सजल करुणा के साथ स्थान पा रहे हो।
अब भी वह तुम्हारी समाधि को फूलों से
ढक जाता है चुपचाप।

ख्रुश्चेव के सुनहरे इतिहास से भ्रष्ट
स्तालिन, विश्व मानव ने
बावजूद तुम्हारे राक्षसी कृत्यों के
तुम्हें अमर पुरुषों की पंक्ति में स्थान दिया है !

जनवादी समाजवाद के भ्रष्टा
दुर्वासा के रूप में तुम
युगयुग पर्यन्त अमर हो !

बगूला

धरती से आसमान तक
हवा में दर्द का उफान
मरोड़ और ऐंठन
प्रसवपीड़ा के समान।
वातावरण में घुटन
हृदय में धड़कन
बाहर बगूला एक घूमता आ रहा,
घूमता आ रहा,
धूल, फूस, पत्तियाँ
जली बुझी बीड़ियाँ
कागज की चिन्दियाँ
कपड़ों की धज्जियाँ
और न जाने क्या कुछ
जो भी आगया उसकी लपेट में
वही उड़ता, चक्कर काटता
चला आ रहा, चला आ रहा।

कुतुबमीनार सा आकार
पृथ्वी से बादलों तक
हजारों गज ऊँचा
उमड़ता घुमड़ता, चक्कर लेता
वायुमण्डल का भँवर यह

धरती के बाहर अचानक उठ खड़ा हुआ।
देखते ही देखते होगया पहाड़ यह
आ गया कहाँ से उसमें असीम वेग ?
पेड़ों को झकझोर
पौधों को मरोड़
सूखी डालियों को तोड़ फोड़
खेतों में घूमता
बागों में झूमता
खलिहानों को रौंदता
गांवों को उजाड़ता
नदियों के पार
नालों के पार
सड़कों के पार
भीमाकार बगूला, प्रचण्ड वात्याचक्र,
हहराता, प्रलय मचाता
जिस ओर से निकल गया
ध्वंस और विनाश के ढेर छोड़ गया असंख्य !

मानव हृदय में भी उठा वात्याचक्र एक
सदियों की मान्यताएं
सहस्राब्दियों की रूढ़ियां
युगों के संस्कार
आचार विचार
सबको उखाड़ ले गया
उजाड़ कर गया वह पल मात्र में।
पुराने मूल्य
सड़े गले दृष्टिकोण
क्रांति की चपेट से चूर चूर हो गये।

पड़ गये जो भी बवंडर की राह में।
गुमराह करनेवाले पुराण और इतिहास
शास्त्र और दर्शन
धर्म और आचार
नैतिक धरातल पर
अभिनव कसौटियों पर
खोटे हुए साबित,
भड़क उठा प्रतिरोध

जनता जनार्दन के
विश्वास की नींवें
हिल गईं अचानक
श्रद्धा के महल उच्च
धक्के से ढह गये।
आइंस्टीन और उसकी बिरादरी के लोगों ने
मार्क्स और एंजेल्स ने
प्रूधों और बाकुनिन ने
लेनिन और क्रोपाटकिन ने
स्तालिन और बुखारिन ने
विज्ञान और दर्शन की
समाज और जीवन की
नई नई व्याख्याओं से
आस्था के पुरातन पिरामिडों को
भेज दिया रसातल।

मानव के अन्तर्जगत में
हुआ आविर्भाव जिस भूचाल का,
जिस वात्याचक्र का,

उससे उलट पलट होगया
सृष्टि रचना का स्वरूप !

बाहर के बवंडर से
भीतर के बगूले की होड़ नहीं,
ओड़ नहीं उसका
कितना विनाश !
कैसा ध्वंस !
अकल्पित परिवर्तन !
निर्माण के डगमगाते चरण,
ले चले हैं मानव को
जीवन के खंडहर में से
दृढ़ता से,
भय से,
अदम्य साहस से,
वहां,
जहां भविष्य लिख रहा है नई लिपियों में
सुनहरी आशा के नये नये अवसन्त लेख।



रातदिन ताने
रातदिन तेवर
रातदिन चिकचिक
नौजवान पड़ोसी से बीबी का लगाव
उसे नहीं था स्वीकार।
लेकिन वह करता क्या
कुर्ता और सलवार
कुर्सी और गले का हार
जुटा सकना था आसान नहीं।
दीनदार, पर वह मजबूर था
रोजी कमाने का सलीका उससे दूर था,
देखा था उसने न
आमदन का कोई द्वार।

उस अभागे दिन
जागा अचानक उसका भाग
बीबी की गुप्त आय का जब मिला उसे सुराग।
गिलट और चांदी के जेवर
झूठे मोतियों के सतलड़े हार,
छींट के कुर्ते,
साटन के सलवार,
देखता रह गया वह आंखें फाड़।
एक बार औरत की कमाई में
आग लगाने का हुआ विचार
पर खानदान की इज्जत का सवाल
उसके था आगे,
वह चुपचाप था,
था वह लाचार!

पीपों से, थालों से,
बोरों से, थान से
पूर मे छिपाये,
पयाड़ में सुलाये,
ईंधन में दबाये
आभूषण वस्त्र और प्रसाधनों का ढेर किया उसने
आग लगा फूंकने को
किन्तु फिर सोच समझ बटोर लेगया बजार
उठाये कई सौ रुपये
मामदू का लिया ऊँट
जिस पर उसकी थी कई दिनों से आंख ।
अब्दुल हनीफ ने की तस्करों से साठगांठ ।

कत्था सुपारी, कपड़ा, कालीमिर्च
चावल, चीनी, चुरट की
गुपचुप निकासी मे किया उसने योग ।
तत्परता और दुस्साहस मे
लागहांट, और कोवट मे
बेखौफ आना, बेखौफ जाना
सोने और केसर की पेटियां लाना ।
होगया वह मालामाल,
होगया निहाल ।
अहमदाबाद, बम्बई परों तले होगये
मौलवी, पंडित इमाम, सेठ, साहूकार
सर्राफ, सतरी, उच्चाधिकारी सभी
बड़े बड़े जो हैं छिपे तस्कर सम्राट
चेहरों पर डाले देश सेवा का नकाब
अब्दुल हनीफ के मुरीद हैं, हैं पैरोकार ।

उनकी राह पर नवाब बना घूमता है
सरे बाजार, किसका डर है उसे ?
पीछे जब साफ सुथरा है रिकार्ड ।
औरत की नजरों मे उठा नहीं फिर भी
तानों से जर्जर करती वह नित्य उसे
दुनियां में विजयी
घर मे वह पामाल
शराब औ कबाब मे डूबा भी
अन्तर की पीडा से पीडित
हनीफ का वह अन्तिम हुआ अभियान।
सडकों और पगडंडियों ने रोका नहीं उसे
टोका नहीं चोरों और बीहडों ने
सेना और पुलिस चौकियों को कर गया पार।
इस फन का था माहिर
किन्तु वह गया कहां ?
काफिला का काफिला बिना आंधी तूफान
बिना किसी घटना के आदमी और सामान
ऊंट और पलान
हो गये विलुप्त बीच राह मे
खोज खोज हारा उसे
दोनों ओर का जहान।
इन्सान खो गया !
हैवान खो गया !
पुलिस रोमांचित है
खुफिया हैं हैरान,
डाकुओं मे सनसनी
तस्करों मे भूचाल !
अब्दुल हनीफ का न कोई पर मिला सुराग।

भाप बन उड गया या
जल हो बहा कहीं ?
रोक लिया गोपनीय प्यार ने ?
नहीं, नहीं ।
बनकर रहस्य एक रेह गया
न कह गया, न सुन गया,
डेढ सौ सोने की सिल्लियों के साथ
पुलिस कस्टडी मे जो बन गई थीं पीतल
जोडते हैं कोई उसका सबध ।
कोई विसीटेबल के वेगनलोड कांड मे
पाते हैं उसका हाथ, जो कि
सील्ड गोदाम मे पांच सौ टिन
गोबर और मिट्टी के घोल मे बदल गये थे
रातों रात, रातो रात ।
एक ट्रक सिगरेट,
जिसके लिए होनेवाला था उसका चालान
पुराने अखबारो का थोक मात्र निकला
जानते हैं इसको कांग्रेस के प्रधान !

रोती है हनीफा,
न कहती है हृदय की बात ।
वीरान रेगिस्तान मे,
उसने सपनों मे देखा,
दफनाया जाते उसे
उन पाक हाथों से
जिन पर रक्तरंजित होने का न करेगा कोई गुमान ।

साँई और फकीरों ने
दरगाह और पीरों ने
किया है समर्थन उसकी हत्या का
और बताया हौले हौले कानों में—
'ये हैं शक्तिशाली लोग
चुप रहना ही जेबा देता है,
वरना राम कोप का कहर
कर रहा है मैया का इंतजार।'



अजगर और चाद

श्वेत अजगर सा भीमाकार !
मृत्युरूप दुर्निवार
अन्तरिक्ष मे पसरता रेंगता आ रहा है
मीलो तक लपलप जिह्वा लपकाता
दूज के चांद की ओर।
लील जायेगा उसे
बिजलीघर की चिमनी के व्यापक विवर से
फूटता हुआ पत्थर के कोयलो का गस भरा धुआ, आह !

सध्या की गोद मे भयातुर सा बाल शशि
बादलों के झलमल अचल की ओट ले
भूल चौकडी छलाग
ताक रहा
झांक रहा
कांप रहा
सिमट सिकुड दब
शकित चकित चित्त
स्पदित हृदय,
सिहरता सा गात लिए
अब तब जा रहा कराल काल गाल मे।

वसुधा मे भीत मन
अगणित सुधाधर हैं

अमृत निचोड़ लिया कुंडलित सर्प ने
चूस लिया, चूस लिया,
जीवन का रस, सुवर्ण
रिक्त मन, रिक्त प्राण
रिक्त ऐश्वर्य
रिक्त नभ आनन, प्रतीची का कुसुम यान।

चिमनी का धुआं, नहीं
केंचुली अजगर
खोल रहा समूल
फूलों का सौरभ,
कुड्मलों का मृदु मधुर हास
धक धक भट्ठी में कोयला रहे व झोंक
ताप तप्त
प्राण दग्ध
सुख मुख झुर्रियों में झांकते झलकते
सौम्य मुख राख हुए जा रहे हैं उनके।
धरती के चांद थे,
घरों के वे प्रसून!



श्वेत अजगर सा भीमाका
मृत्युरूप दुर्निवार
अन्तरिक्ष में पसरता रेंगता
मीलों तक लपलप जिह्वा
दूज के चांद की ओर।
लील जायेगा उसे
बिजलीघर की चिमनी का
कढ़ता हुआ पत्थर के कोयल

सन्ध्या की गोद में भयातुर
बादलों के झलमल अंचल
भूल चौकड़ी छलांग
ताक रहा
झांक रहा
कांप रहा
सिमट सिकुड़ सब
शंकित चकित चित्त
स्पंदित हृदय,
सिहरता सा गात लिए
अब तब आ रहा कराल काल

वसुधा में भीत मन
अगणित सुधाधर हैं

आदान प्रदान से ही उनका निखार होता
होता उनका परिष्कार
शृंगार होता
शब्द अर्थ योजना
अभिधा लक्षणा व्यंजना
रस रीति अलंकार
भाषा के अनेक द्वार
सभी खुले
अबाध उनमें प्रवेश सबका
न ऊँच नीच छुआछूत का विचार
विविध भाषा बोलियों के वर्षा जल से
भरता है सरस्वती का जलागार।

कौन ऐसी बोली है
कौन ऐसी भाषा है
जिसका निराला अंग
जिसका पृथक विकास क्षेत्र
जिसका न किसी से सपर्क सरोकार ?
जातियों, फिरकों, कबीलों के
महावन में
भाषा लताएं फलती हैं
फलती हैं
फूलती हैं
हरीभरी डालों के गले लग झूलती हैं
करतीं कुंजों की सृष्टि
सुरभित फूलों की वृष्टि
नित नई नई
जहां तक सभ्यता और सस्कृति की जाती

भाषा विवाद

भाषा विवाद,
कैसा यह भाषा विवाद !
मानव का उन्माद
अनशन औ' हठवाद
हत्याएं, अग्निकांड,
ध्वंस, विनाशलीला
क्या भाषा विवाद के समाधान ?

भाषा साहित्य, शिल्प,
कला, विज्ञान
मानव की साधना के प्रमाण
शान्त वातावरण में हुआ है उनका विधान
उनके नाम पर संघर्ष,
उनके नाम पर अनाचार !
सक्रिय है मानव के अन्तर का दस्य
विकास और निर्माण से
नहीं है उसे रंच प्रेम।

भाषाएं नहीं चाहतीं साम्राज्य खड़े करना
उनको न सत्ता से मोह
भाषाविज्ञान है प्रमाण
उनके सहयोग का
उनके सहभोग का

आदान प्रदान से ही उनका निखार होता
होता उनका परिष्कार
शृंगार होता
शब्द क्रम-योजना
अभिधा लक्षणा व्यंजना
रस रीति अलंकार
भाषा के अनेक द्वार
सभी खुले
अबाध उनमें प्रवेश सबका
न ऊँच नीच छुआछूत का विचार
विविध भाषा बोलियों के वर्णों जल से
भरता है सरस्वती का जलागार।

कौन ऐसी बोली है
कौन ऐसी भाषा है
जिसका निराला जग
जिसका पृथक विलास क्षेत्र
जिसका न किसी से संपर्क सरोकार ?
जातियों, फिरकों, कबीलों के
महावन में
भाषा लताएं फैलती हैं
फलती हैं
फूलती हैं
हरीभरी डालों के गले लग झूलती हैं
करती कुंजों की सृष्टि
सुरभित फूलों की वृष्टि
नित नई नई
जहाँ तक सभ्यता और संस्कृति की जाती दृष्टि।

उनमे न है कहीं विवाद
उनमे न छिपा साम्राज्यवाद
हौवे के पीछे दौड भागना
न जिसका अस्तित्व कहीं
व्यर्थ है, है बेकार
बढ़ने दो उनको
अपने ही खाद पानी से
रुद्ध न करो भावाजगत का नैसर्गिक व्यापार।



कगार

नदी की प्रचंड प्रखर धारा ने
यौवन की आंधी मे
सब कुछ दिया बहा
किनारे पर खड़ा कगार
मूक
स्तब्ध
दुर्निवार उत्कट प्रेम से जड़ीभूत
रोक रखने के लिए विद्युत्प्रवाहिनी को।

प्रणय संकेत का कर तिरस्कार
किसी के स्वप्नों में खोई
किसी की याद मे भीगी
रोमांचिता
उर्म्मिला
रची प्रेम रंग मे
उच्छल उमंग मे
उद्दाम गति नर्तिता
गतानुगतिकता त्याग
द्रुतगति चली विपथगामिनी !

आश अभिलाष लिए
नयन मूंद
ध्यान लग्न
सोचता खड़ा कगार
बाहों से गई निकल
बसन्त वायु सी विकल
प्ररोहिता प्रहर्षिता
छोड़ गई निचुल निकुंजों के
कानों में कोई संदेश
लज्जूरवन के पास है अवश्य उसका स्थान।

शत सहस्र वर्ष की
प्रतीक्षित उत्कंठा लिये
नदी तट शयन कर रहा था घनी छाया में।
वे कदम्ब,
वे तमाल,
वे करील,
वे पलाश
आज हैं विमुग्ध
उस लीलामयी सलिला के आतुर पलायन से।
करुणाकुल मे कगार
लट कर सुन रहा
बज रही धुन जो क्षितिज के परे कहीं।
आ रहीं विलोल स्वर लहरियां
अजस्र गति
अन्तर मे उनके है कोई दग्ध वेदना!
मुड़कर देखने की साध भरी
स्वाद भरी

भाग रो
नाग भरी
चंचल चपल दृष्टि
विजड़ित रह गई
श्वास हरे बीहड़ कछारों मे ।

भाग्य की विडम्बना, खड़ा कगार
कोई नहीं पूछता है कैसा प्यार,
कितना प्यार,
कब का प्यार,
अंतर मे
रग रग म
नस नस मे ?
हो रहे जीवन के श्रेष्ठ क्षण विनष्ट प्राय
रातदिन सांध्य प्रात
घुल गया उसके दृगों मे प्रभात !

य स्वर्ण वल्लरी
गभ से उभक भाव
ग्य हो, हो दबाव
नी कण्ठहार
सी अनजानी रात मे ।
लक्षित कगार
णु वीणा पर स्वरों को साध
उठा मिलन राग
वन महक उठा
प्रदेश भकृत

थे स्वर]

भू से गगन तक
प्रणयपथ चन्द्रकिरणों से रंग गया
धवल, धवलतर !

चौंक उठी सरित्
लहरियां चिहुँक उठीं
अद्‌भुत शृंगार देख
कंकाल मृत्तिका का खड़ा था विरूप सा
वि-खंड सा
न जिसकी ओर दृष्टि जाती थी कदापि ।
यौवन का कैसा अपूर्व स्वप्न-दान है !
रूप रस गंध का समन्वित कलेवर
खींचता है अनायास मन उधर
उभार आज लहरों में आ रहा
उफान मन में,
आकुल कल्लोलिनी का वेग थम गया,
जम गया प्रवाह
मौन हो गया उसका नृत्य
थिरकन पर उसकी
सिहरन का पड़ गया पाला ।

मुकुलिता लता के स्निग्ध स्नेह में विमुग्ध
कगार नहीं देख पा रहा परन्तु
परिवर्तन का अन्त ज्वार ।
काल की विडम्बना
विकट भाग्यचक्र गति !

मलिला भुजगिनी विलोम गति
वक्र दृष्टि
रुष्ट फुफकारती
पटकती सहस्र फन
काटने लगी कगार
झूमती लता का सोहाग
उजाड़ने में उसने लगा दिया अनन्त बल
किन्तु प्रणयी युगल न भीत हुए
मौत के गले लग खड़े रहे, खड़े रहे।
नाश नष्ट करके भी उनका,
न उनका प्यार
बहा सकी सरिता की क्रुद्ध धार।
निर्जन में निःस्वन काल वीणा पर
भाव मूर्त है उनका वह अनन्य प्रेम।
सुना जा सकता है दिन में किसी समय
अमर संगीत उस शाश्वत प्रणय का।



पनघट

कर दिया बराबर संविधान ने सबको,
सबको समान अधिकार प्राप्त
कोई न बडा छोटा रहा
धर्म निरपेक्ष भारत मे।
कौमों और जातियों का
मजहब और सम्प्रदायों का
युग गया बीत।
हिंद महासागर की गोद मे
राष्ट्र—एक महाराष्ट्र जन्मा।
कैलाश से कुमारी तक
खंभात से खाडी तक
एक सूत्रता मे बद्ध
सदियों से बिखरी मानवता को
मिला एकता का नया शास्त्र!

एक जुट
एक ध्यान
एक प्रण
एक प्राण
एक मन
एक तान
उभरा भारत महान

धरती से आसमान तक दृग्गोचर
जगह जगह,
यही तथ्य, यही ज्ञान
सुनते हैं ऊँच नीच का विधान
भूलकर मानव विकास में
छूट गया है यहाँ का कण कण, प्राण प्राण।
गर्व से उठा भ्रम
पूर्वजों का हुक्म
छोड़ छोड़ स्वर्ग का निरयानन्द
आगया यह भारत भू पर।

नया नया पनघट
नलों की नई टोंटियों का जमघट
तांबे पीतल के कलश
टीन के डोल और लोहे के बाल्टे
मिट्टी के घड़ों से लड़ने को तैयार
फूटते कपाल
घड़े चूर चूर होते
पनघट पर कायम है अभी
ऊँच नीच का विधान।

कौन कर सकता है हिम्मत यहाँ,
राजा जहाँ का है सड़ा गला समाज ?
हिन्दू, मुसलमान,
सामी और मोची
सिक्ख और चूड़े,
अलग अलग टोंटियों पर अंकित थे

जातियों के नाम।
मिटा दिया उनको नये शासन ने परन्तु
मन से मिटा नहीं
यह भेद भाव
ज्यों का त्यों कायम है।

सदियों से बद्ध
ज्ञान गरिमा शून्य
निरा भुस भरा दिमाग
आदमी को आदमी न मानने का घोंगड़ हठ
मनों और प्राणों में सजोये विष
लड़ रहे हैं नारी नर
कंठ फाड़।
ईर्षा द्वेष के बोझ ढोने में है उन्हें कमाल।
अमृतफल पाने की साधिकार
करते हैं मांग किन्तु
उसमें नहीं मानते हैं किसी अन्य को भागीदार!

टोटियों का स्वच्छ जल
नियामत लोकतन्त्र की है
पीने का जिसे सभी को है एक सा अधिकार।
संविधान कहता यही
मगर संविधान का पर तु
इन्हें है कब स्वीकार?
मूर्ति गढ़ खड़ा किया
देवता संविधान का जो
तोड फेंकने को उसे आप ही हैं तयार।

इन्हें नहीं ज्ञान
करने क्या जा रहे हैं
मानव के हकों का कर तिरस्कार
डोलियों से जल उन्हें भरने न देते गँवार !

धोया और नहाया हुआ
गन्दला अपावन जल
नाली से बहकर
कुण्ड में भरा है जो
पशुओं को अरुचिकर
रोगों का घर
इस जलती ग्रीष्म ऋतु में
आधा घड़ा पाने का कहां है उन्हें अधिकार ?
वह भी बिना दस बीस गालियों के मिलता नहीं
सार्वजनिक पनघटों पर है यह हाल !

संविधान की अवज्ञा का
कानून की हत्या का
सवर्णों को मिला है पट्टा किस न्यायपीठ से ?
कब तक चलेगा यह अनाचार
पूछ रहे गांधी,
कबीर,
बुद्ध मानव
पनघट पर दर्शक बन खड़े खड़े,
राजेन्द्र बाबू से
नेहरू से
हिन्दू समाज से

किन्तु उत्तर कहीं से नहीं आ रहा
वातावरण होता जा रहा विक्षुब्ध
घट असंतोष का भरता चला जा रहा ।

पनघट पर घडा लिये
प्यासा खडा अछूत
रक्त-क्रांति का अग्रदूत
चेतो, चेतो,
अनागत भविष्य के आने के पूर्व
ऐ महज्जनो !
उच्च वर्णों के किरीट !

पनघट को संविधान से होने दो
शासित, बनो मत बाधा तुम ।
नाश के कगारे पर
धक्का न दो
समाज के जर्जर ढांचे को,
ढह जायगा वह, साथ में
तुम भी रसातल मे समा जाओगे
भूलो न इस सत्य तथ्य को कदापि !



मिथ्याचार

मिथ्याचार कहता पुकार,
मुझे प्रश्रय मिला है
द्वार द्वार,
घर घर,
गांव गांव
ठांव ठांव,
मेरे लिए सबसे बड़े सुरक्षा के स्थान
वही हैं, जहां मिलता है बड़ मिथ्याचारी को।

भाग्य की विडम्बना मेरी नहीं इसमे
यह है शुद्ध सनातन व्यापार
सत्ता से खेलते सभी हैं आज
खेलते सभी थे सदा,
कौन सत्ताधारी कब
दूध से रहा धुला ?

सतयुग
द्वापर
त्रेता
या कि कलयुग
सत्ता का सिंह
दबोचता रहा निरीह जीवों को त्रिकाल।

मिथ्याचार उसके साथ
शासन का अंग बन गया
न आया पकड़ मे कभी,
तड़फड़ाता तोड़ता दम
उसका अपना शिकार ।
शासन और विधान सब
मिथ्याचार के विरुद्ध
फिर भी शुद्ध रूप मे
टकसाली सिक्का सा
चलता वह निर्विवाद ।
साहूकारे मे न रोक
बाजार मे न उसे टोक,
राज्य के सभी विभागों मे व्याप्त वह
रेलों और बसों मे
पाया है उसने स्थान ।
डाकघर मे घुसा वह
खजाने मे पहुँचा वह
निर्माण और विकास मे है उसका एकछत्र राज ।

मारना उसको अशक्य
त्यागना उसे मुहाल
जीवन का बहुत बड़ा प्रतिशत है मिथ्याचार ।
लोकतन्त्र मे
आम चुनावों मे
पगपग वह साकार ।
अभिशप्त भी वह वरदान तुल्य वरणीय
देखने मे आता वह
फिर भी कभी कदास ।

आत्मबल की वज्र-कठोर चट्टान से वह
टकरा जाता दिग्भ्रमित
उड़ते स्फुलिंग
होता विस्फोट
विद्युत प्रकाश से भर जाता जहान,
झर जाता मिथ्याचार का गुमान।

युग के ये स्वर्ण क्षण
इतिहास में अमर
उनको मिटाना है न किसी के लिए आसान।

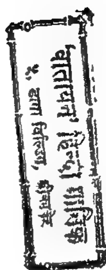


नाला

यह नगरपालिका का नाला
दुर्गन्ध भरा,
यह मैल भरा
यह कीचड़ वाला गीड भरा
बहता जाता
बहता जाता
रुक रुककर यह कहता जाता
अपने लोगों की मनोव्यथा
गलियारों की दुख-दर्द कथा !

अनगिनत नालियों का संगम
अगणित नालों का आलिंगन
बना नाला
इतिहास पृष्ठ मानव संस्कृति का
चित्र सवाक् सभ्यता का
नागरिकों की रुचि का प्रकाश !
इस नाले मे बहते विचार,
यह नाला है जीवित प्रचार,
सब वादों का,
ऊँचे ऊँचे आदर्शों का ।

है साम्यवाद इसमें निमग्न
यह लोकतन्त्र का रूप नग्न
यह नाला है जीवन समग्र।



अधिनायकवादी यह नाला,
जातीय श्रेष्ठता का वाहक
इसका मथन करते गा-गा,
हँस हँस,
रस रस
रिस रिस,
ये अवश विवश
दुर्बल मानव
ढो रहे सभ्यता का गुरुतर
जो शकट
विकट
संकट आकुल।
कुलकुल
घुलघुल
धुलधुल
सिर से पैरों तक महा
घिनौने मले मे
नाले को करते स्वच्छ नित्य,
बन सेवा व्रत रहे साध,
कर्तव्य लग्न, ये अस्पृश्य!

कितने भ्रूणों को यहां साथ
लाया करता यह
सांध्य प्रात।
पापों का लौह आवरण बन
विकृतियों पर
घनघोर घटाओं का पर्दा।
यह नगरपालिका का नाला
युग युग से नगरों की गाथा का
एक मात्र प्रच्छन्न स्रोत
आशा आकांक्षा, शोक-रोष
इस नाले के पथ के साथी।
यह है समाज का शुद्ध स्वच्छ दर्पण
चित्रित इसमें नागर-संस्कृति।

युग युग की नगर-सभ्यता का
जीवन्त रूप
गदा नाला
सड़ता नाला
कीचड़ से रुंधा, मुंदा नाला!

यह श्वास बद्ध,
यह ऊपर नीचे से अशुद्ध
अस्वच्छ हृदय भी यह
शुचिता का परम पवित्र द्वार
यह नगर-पार्श्व में
पुण्य तीर्थ का परम रूप
निर्बाध

प्रगति-सोपानों पर गतिशील
किन्तु दुगति के बीहड मे विलीन
होने को श्रातुर है नितान्त
गहरा नाला, यह शांत दांत !



नेफा नुकसान

हाजीजी को है याद नहीं
ये जब बैलों के भाई थे
कब साथ साथ वे चरते थे
दुख दर्द बटाते थे मिलकर।
है भूल गया उनको रिश्ता
वह गाय द्वार पर अयश खड़ी
ताकती शून्य मे
घर मे उसको ठौर नहीं
जो प्यार बहिन का पाती थी
जो दुहिता सी मन भाती थी
सोती थी आंगन मे
टूटे माचे के पास
रंभाती,
गाती सी कुछ स्नेह गीत !

सोते जगते, खाते पीते वे
हाथ फेरते चलते थे
उसके कोमल चिकने शरीर पर
पुचकार भरा था प्यार विपुल
तब, जब वे हाजी बने नहीं थे,
गाड़ीवान मात्र थे।
प्रात से साय तक

धूप हवा पानी से
बलों की जोड़ी के साथ साथ
ढोया करते थे वे अनाज
स्टेशन से गोदामों को ।

बैलों का उनको था गुमान,
गायों का था अभिमान बड़ा
कुछ ऐसा था
अटूट पहरा सबध
कि उनको भुला नहीं पाते थे वे
उस समय
जबकि जीवन था सीधा और सरल
सस्ता अनाज था,
सस्ता था सब कारबार ।
बैलों गायों का मोल
न कुछ था
पर उनका जीवन मे था स्थान बड़ा
सौहार्द-स्नेह-बधन कठोर,
वे उसमे थे यों कसे हुए ।

फिर विश्व क्षितिज पर
उठा अचानक एक बड़ा तूफान
युद्ध आह्वान,
कि जिससे फूट उठा
जीवन के अन्तस का विराट
शांत पड़ा विक्रांत ज्वालामुखी

बदला समाज
सब बदल गये उसके मूल्य।
गाडीवान,
गाडीवान कौन रहा गाडीवान ?
जीवन के मोड़ पर
छोड़ भागा गाड़ी-बैल
बेच पांच पांच सौ को एक-एक
रातोंरात गाडीवान बन गया ठेकेदार
गाडीवान ठेकेदार,
गाडीवान ठेकेदार !
हुज़ूरदार ठेकेदार !
खुला मिला काला बजार,
खूब चला व्यापार
उन्नति के शृंग पर
जा चढ़ा ठेकेदार
तैर चला चांदी की सरिता के आर-पार

नया नया साहूकार,
दीन और कलाम पर व्यापी श्रद्धा अपार
मक्का मदीना, हज्ज नमाज़ से
हो गया प्रगाढ़ प्यार !

काल महासागर का पार कर विस्तार
क्षीण औ' धुंधली सी
स्मृति में कभी कभी
उठता ज्वार,
कभी कभी हाजी की आंखों में

घूम जाता चक्र,
गाड़ी बैल, गाड़ी बैल,
घास फूस कच्चा घर
आंगन मे, नीम तले,
करती जुगाली खड़ी गाय कहीं आंखें मूंद।

स्वप्न उड़ जाते
पल मात्र मे परन्तु वे
दौलत का नशा होता जाता नित्य गहरा।

छप्पर के स्थान पर हवेली का निर्माण
होता गया, त्यों त्यों बेचारी दीन
बुबल, गाय यों खिसकती गई
कोने से कोने मे,
कोने से कोने मे,
अन्त मे होगया कोना भी उसे मुहाल।
वैभव बरसता गया
नशा गहरा चढ़ता गया
गाय गौशाल किन्तु होते गये सकरे।

हाजी ने उठाये मकान पर मकान
मूक पशुओं के किन्तु छिनते गये स्थान
दीन धर्म के स्वरूप
दाढ़ी और अचकन मे
हाजी का खिल उठा रूप।
मसनद भी, तकिया भी,
कमखाब

गोश्त कबाब,
शानो शबाब,
बे हिसाब
हाजी जी हो गये दूसरे नवाब

गाय से गया रिश्ता टूट
आ गई यह सड़क पर छूट।
जहाँ जहर से हुआ किनारा
खड़ी है बेचारी बेसहारा,
देख रही बेबस निराश
कहाँ गया स्नेह पाश ?

आँखों का चश्मा,
हाजी जी का
खिसककर आगया है नाक के अग्र भाग पर।
गाय के अस्थिपञ्जर देख
लगा रहे हैं हिसाब
क्या हुआ, कितना हुआ,
नफा या नुकसान ?

नफा या नुकसान,
गूंज उठते धरा धाम,
गाय खड़ी ताकती है,
कांपते हैं हाड चाम !

लोकतन्त्र

जन मन स्वतन्त्र,
जन जन स्वतन्त्र,
भारत में जागा लोकतन्त्र।

नारी स्वतन्त्र
घर की विभीषिका से बाहर
चल पड़ी
उफनती सरिता सी,
तोड़ती कगारे
मर्यादा का तिरस्कार करती।

स्वच्छन्द कम्यूनों का जीवन
अभिनव आकर्षण बन
उसको पतवारहीन नौका सा
खींच धार की ओर ले चला
घूम कर नहीं देखने की रुचि उसे,
बुजुआ अतीत का
ढोयेगी वह नहीं भार।
तन मन का राष्ट्रीयकरण कर
शोषणहीन समाज
बनाने का प्रण लेकर
वह गर्वित, वह है प्रसन्न।

नारी स्वतन्त्र
अपनी इच्छाओं की रानी
उसको अपने से प्यार
घर, गृहस्थ, पति सन्तानों का भार न उस पर,
उन पर तो अधिकार राष्ट्र का,
परिधि मोह की उसे बांधने में अब अक्षम,
व्यापक उसका प्रेम
समाया जिसमें जग जन।

नव मूल्यों
नव संबंधों की नवस्फूर्ति से
वह परिचालित,
नव समाज की अधिष्ठात्रि वह
स्वप्नों के अपने भारत में
करने निकली वरण
व्यवस्था नूतन को वह।

युग युग जीर्ण पुरातन पथ
उत्सर्ग त्याग से क्षीण
कुटुम्बों परिवारों में बंधा
छोड़ तृण तुल्य
स्वैरिणी वह निकली
आंखों में लेकर एक लपट
प्राणों में विष के विषम बाण।
नारी स्वतन्त्र।

जन मन स्वतन्त्र,
जन गण स्वतन्त्र,
भारत मे जागा लोकतन्त्र !

घर घर मे,
नगर नगर मे,
ग्राम ग्राम मे,
डगर डगर मे,
युवक प्रौढ़ जन,
बाल वृद्ध मन,
सब मे स्वतन्त्रता का प्रचण्ड
उन्मत्त वेग से प्रवहमान।
जीवन बंधन व्यापार शिथिल
श्लथ सामाजिक उपचार
असंयत मुक्त गगन
उन्मुक्त गान।

गतानुगतिकता छिन्न
भिन्न भ्रम
नव जीवन
उत्थान, नवोन्नति
नये नये पथ
नये क्षितिज पर नये उपग्रह
प्राचीर्हीं अनसुनी
अभीप्सित कक्षाओं में भ्रमणशील,
निर्बाध
निरंकुश,
निरवलंब !

स्वच्छंद धरा,
स्वच्छंद धाम,
स्वच्छंद व्योम,
स्वच्छंद याम,
स्वच्छंद ऊर्मियों का प्रवाह
ले चला बहा प्राचीन, पूज्य
श्रद्धास्पद
मन के स्निग्ध सत्व ।

स्वातन्त्र्य सूर्य के नवालोक में
नये मूल्य
नव दृष्टि
सृष्टि नव
रेडियम धर्मिता व्याप्त
वातानुकूलित जीवन के ओर छोर !

संतुलन शून्य अधिग्रास
तदपि मानव उर में उल्लास
उच्छ्वलित
आशान्वित विश्वास
कोटि कोटि चरणों में
चपला की गति चपल
जुटा रही जीवट
अटूट
सपनों से बोझिल
उत्पादन विपुल
रिक्त भय
स्वस्थ निराशों
प्रचुर संभावनाओं से उज्ज्वल लोकतन्त्र ।

जन मन स्वतंत्र

जन गण स्वतंत्र

भारत में जागा लोकतंत्र !



आश्वासन !

चिर नवीन आश्वासन,
प्रगति पथ का सबल,
बल,
साहस,
सत्प्रेरण,
युग युग
प्राणों का पूरक
आश्वासन !

आदिम युग से हाथ थाम
कल्पान्तों के बीहड़
दुर्गम पथ,
संकटापन्न
उत्कट गिरितट,
सागर सघट,
भूचालों-ज्वालामुखियों के
कंपित
जलते झुलसे पग
करा चुके संतरण
सहज उसके बलिष्ठ कर।

प्रति बार नये
प्रतिदिन नूतन आश्वासन
जीवन का भरते रहे रिक्त घट
तरल
हलाहल से प्रतिपल
छलते मानव को अहरह !

ओढ़ धर्म का छद्म वेश
उपदेश नया
परिवेश नया
मंदिर मठ मूर्ति पुजारी मिस
आश्वासन का सुरभित पराग
झरता
भरता
युग युग
जन मन।
भूला मानव
लड़ता
मरता
गिरता
गड़ता अनथक आकुल !

आश्वासन की बलिदानी पथ
रक्तात्क हुआ
शत सहस्र बार।
खाड़े कृपाण की तीक्ष्ण धार,
आश्वासन ध्वज उत्तोलन कर
जेताओं विजितों के मन मे
भर चुकी अनेकों प्रखर ज्वार।

निर्माण ध्वंस सोपानों पर
चढ़
गिर,
इसके बल
हुए सफल
आशान्वित नर्तित युगारम्भ,
मूर्छालस
मु बित
गत युगान्त !

आश्वासन के जीवन्त चरण
शीर्षस्थ सतत
सतयुग
त्रेता
द्वापर
भूपर
उरेहते गये प्रगति के वक्र आंक।

पुर आज आश्वासन
जजर मानवता हित
सदय हृदय
परसेवो सायो खुश्वोव
निर्माल्य रूप लेकर
समुपस्थित
करते क्रेमलिन मे घोषित
'आगामी '८० में
प्रति व्यक्ति एक अडा प्रतिदिन
देने मे होंगे हम समथ ।'

यह दशाब्दि उपरान्त
महान जनवाद की यह विजयोपलब्धि !
आश्वासन वरदान प्राप्त कर
विवश
व्यथित
मथित
विचलित
विचलित जन मन अनुक्षण !

रक्त क्रांति का सुफल,
खोखला
लक्ष रव आश्वासन !



भावात्मक एकता

[illegible] तर्विरोध क्षरण
रोमरोम
नस नस
एकीकरण मन का
क्षीयमाण,
भावात्मक एकता
हु स्वप्न मात्र।

सांझ प्रात घात भिन्न
छिन्न शिरा
छिन्न तनु
प्राण का प्रवाह छिन्न,
बह चले विलोम गति
उरस सभी,
अहरह होड़ मची
आत्मघाती विघटन उपास्य जन जन का।

विफल प्रयास एक जुटता के
जीवन दशा दुग्ध में
पड़ गई खटास स्वार्थपरता की
विषम विष व्याप्त
सुधा सिंधु।
अपनी अपनी ढफली
अपना अपना राग
सब गाते औ बजाते
नहीं सुनना चाहता
कोई किसी की बात।

अविद कजागस के नेता,
सिक्ख पंथ के प्रणेता,
लीगी,
समाजी,
सभाई
सब खोद रहे खाई
लोकतंत्री चेतना शून्य
जन मानस ?
नहीं, नहीं,
नेतृ दल।
सत्ता लोलुप
विदेशी शिक्षा,
संस्कृति, भाषा,
विधि विधान के प्रति निष्ठावान।
भूल निज पथ, निज रूप ज्ञान।

भावात्मक एकता की प्राण
राष्ट्रभाषा
हिंदी का पद पद प्रतिष्ठान !

ज्योतिकिरण प्राकाक्षा
सब सेवा दृष्टि
ऊपर से नहीं, नीचे से
जन जन से
मन मन से
उच्छलित,
उमगित
भरेगी उस रिक्तता को,
उस व्यवधान को
प्रस्तुत कर समुचित समाधान ।

भाषा के अन्तर से
जीवन की गिरिकन्दरा से
बहकर लावा
बनेगा एकता का सीमेन्ट,
जुड़ जायेगी छिन्नता
भिन्नता
खिन्नता
अभिन्नता के वातावरण में
गूंज उठेगा, 'जन गण मन अधिनायक जय हे !'

[प्रतिवदन के स्वर

कण कण
अणु अणु
इलेक्ट्रोन
न्युट्रोन
प्रोटोन
धनाणु
ऋणाणु
अल्फाणु
मिलन-संगीत की स्वर लहरी में
ग्रथित हो जायेंगे
होगा भावात्मक एकता का अमाप प्रसार !

होगी नहीं आयात
मिलेगी न भेंट
दर्शन में दृष्टिकोण में
न उसका कहीं विनियोग,
अपने प्राणों के प्राण में
क्षीरसागर में विष्णु स्वरूप
उसका अविरत रूप
रमा है
वह जलती शमा है,
उसमें निहित है अनन्त शक्ति
उसे खोना नहीं, पाना है,
पाकर अपनाना है
यही हो हमारा प्रयास।

कैलाश के शिखर से
कन्या कुमारी तक,
द्वारका से कामाक्षा तक
वाणी वाङमय की एकरूपता का व्याख्यान
लिये है भारत का समुत्थान
यही जीवन, यही है गान
प्राणों में भासमान।
यही चिर अभिनव अजस्र तान।



ये उल्लू, यह चादनी रात !

मधुयामिनी,
चादनी मे खोये धरती आसमान !
रेशम का आलम,
प्यार की दास्तान ।

कहां से उड़ आये इतने उल्लू ?
किन बियाबानों को उजाड़ आये
छिपे कहा थे ये हैवान ?

उन्नीस सौ सतालीस से पहले
किन सुनसान खडहरों मे,
किन अधेरी बुर्जियों मे,
बद थे ये ?
स्वच्छन्द आज !

चादनी रातों को जख्मी करते
छाये भारी भारी डैने
वातावरण मे हड़कप
अतरिक्ष मे उफान !

जन स्वातन्त्र्य की रजत रश्मियों में,
तिमिर के तिमिंगिलों का दौर
कुछ अजीब
कुछ परेशानियों भरा
उभरा
पेशानियों के नीचे
जल स्थल के ऊपर !

केमरे के लेन्सों में
इनके विरूप चेहरे
भद्दी अदाओं से
होते प्रतिभासित ।
इनकी अनुपस्थिति को
सह सकता नहीं
विकास का अभिमान ।

व्याकुल मधु रजनी का
विधुर विद्रोही मन
इनके हेतु ।
राहु केतु ये
सिंधु मथन से प्राप्त अमृत घट
मुंह से लगाये
पिये जा रहे सुधा, सुरा की तलछट ।
ताकते खड़े
अमर अवाक, व्यथित !

निशाचरों के कोलाहल से कंपित,
पंकिल वक्ष
धकधक,
मधुसिक्त वरौनियां
विरक्त अपांग,
बलात्कार की पीड़ा को
सह नहीं पा रहे
मधुराका के सुकोमल अंग !

ये उल्लू, यह रात !
बह चली झंझावात,
दूर, अति दूर है अभी प्रभात !



नई कविता

तोड़ वही छन्द बन्ध
कविता धारा अमन्द
मुक्त गान
मुक्त तान
मुक्त जन मानस,
उरेहना, सहेजना है
जन्मजात भाव चित्र।

शाश्वत सरस सिक्त
वैदिक अवैदिक,
नैतिक अनैतिक,
कुंठित अकुंठित,
नग्न अवगुंठित
विश्व मन, विश्व प्राण
व्याप्त चिरपोषित
नवोदित
वीणापाणि कल कंठ निःसृत
नई विधा
सहस्रधा विभक्त
लोक चली भये पन्थ !

नूतन पुरातन के बीच
खड़ा देख रहा दोनों ओर,
दोनों छोर,
नवस्थापित
नये प्रतिमानों के लेख लिये
नया मील पत्थर ।

उपमा उपमेय नये
अनगढ़
अप्रमेय
वाम पक्ष
लक्ष लक्ष
संकुल प्रतीकों के अरण्य में,
ध्वस्त अल इतालिया के
अभागे यात्रियों के शवों सा
यहां वहां, प्राण भी प्रमाणहीन
छितरा पड़ा, परन्तु
जगा रहा वेदना,
व्यथा से छेद रहा मन,
दग्ध कर रहा हिमांशु
दक्षिण पक्ष
बन रहा विसुवियस, एटना ।

नई कविता के नायक मंडित
नव्य भव्य चरण
उन्मुक्त चरण की दिशा में
लिये जा रहे हैं उसे क्षण क्षण ।

उठो कवि, चलो साथ,
जाने दो न उसे अनाथ
परम्पराओं के घेरे से बाहर।
प्रणम्य पथ अछूता
चरणों से तुम्हारे सौम्य,
होने को कृतार्थ पड़ा— वहां,
कहां ?
यहां, इधर, इधर यहां !



एक किरण

एक चरण, एक शरण
एक भाव, एक भरण
एकता प्रसार में
अनेकता समाहिता,
न रूप राग
आकृति न
प्रकृति प्रमेय
नाम धाम ध्येय ध्वनि न।
नीरव निशब्द
निराकार
वासनाविहीन
महामौन महाशून्य
विघ्नविहीन द्वन्द्वमुक्त
अनिबद्ध अपार्थिव
अव्यक्त एक बिन्दुरूप,
सिन्धुरूप,
एक चरण, एक शरण,
एक सूत्र, एक किरण !
काव्य एक, भाव्य एक,
श्रव्य एक, श्राव्य एक !
एकोऽहम् अनेकोऽहम्
अह वयम् न त्वम् न त्वम्।

दो बहने

वसत हेमत मे,
शिशिर मे,
ग्रीष्म मे,
वर्षा दिगंत मे

घड़ी की दो सुइयां
साथ साथ
पास पास
फुटपाथ के सहारे
राजमार्ग के किनारे
हंसतीं किलकतीं
थिरकतीं
बिचकतीं
बिदकतीं
कहां जातीं ?
किसे खोजतीं ?
रहस्य नहीं खोलतीं,
न बोलतीं
न खोलतीं हृदय के भाव
परिचित अपरिचित से,
मन्द मन्द जातीं चली
अपने में समायी
सरसे सपनों भरी आंखें लिये ।

शत सहस्र वर्ष उपरान्त
सौम्यता की प्रतिमाएं
छोटी बड़ी सुइयां
समय का अचल गहे
चंचल चरणों से
चपल, चपल गति
दशकों की हृत्तन्त्री पर
आघात करती
नित्य
उसी भांति आती जाती हैं।

न रुकतीं,
न थकतीं,
अदृश्य प्यार के जादू बंधी
निरंतर
अथक प्रयास।

उनके पदचिन्हों में
सौ वय के
मेंहदी मांडनों से
रचे काव्य
स्वच्छन्द छन्द
गुनगुना उठता पुलकित समीर,
हस्तिवन्त की शुभ्र वीणा पर,
युगयुगों के गलियारों में
नूपुरों की झंकृति मिल
बखेरती संगीत की तरल मधुर लहरें

तुषारों और तारों भरी रातें
पोंछती शबनम से,
रश्मियों से,
उनके पदपद्मों के अलक्तक को
आठों पहर।

घड़ी की वे सुइयाँ,
समय को पहचानतीं,
हृदय को बिलोतीं और छानतीं,
मन्वन्तरों के उद्धत ललाट
और आहत व्यक्तित्व को
पैरों तले रौंदती चलतीं
प्रपातों में मादक लालिमा लिये,
भोली अबोली
ही श्री रञ्जिता!

ज्येष्ठा कनिष्ठा दो बहनें,
एकरस आगरी
गुणागरी
चटुल चपल हृदयवेधिनी,
सुकेशिनी, नतानना,
रौंदतीं चलतीं किसे?
फुटपाथ के सहारे,
राजपथ को बुहारतीं
पक्षल बरौनियाँ

छानती रेणुकण,
रात से प्रभात तक
अश्रान्त भाव से,
लज्जा रूप लज्जा मूल !

कौन वह भाग्यवान,
कौन वह रूपवान,
कौन वह युवा तपस्वी
मनस्वी, रजत रतन कवि
मुग्ध हृदय
प्यार ज्वाल में
जिसके, जलती भी
चलती आ रहीं वे युग युग
अमन्द अरुद्ध अविधा त ?



अतीत स्मृतिया

याद किसे आती नहीं
संध्या के कुहासे मे
किशोर अतीत की
कल्पना कुसुम वत्
इन्द्रधनुषी स्वप्निल प्रच्छाय रूप
वाम दक्षिण पार्श्ववर्तिनी
शत शत स्नेह मूर्तियां।

हास विलास उल्लास पूर्ण
उन विगत वीथियो मे
यमुना पुलिन पर
निचुल निकुंजो मे
अंकित हैं कितने रास लास
हास श्वास !

समय की सरिता मे
बह गये कितने वर्ष !
युग युगान्त
देश प्रान्त
भ्रान्त मन घूम रहा
चकित चकित
घूम घूम नित्य,
मधुवन वृन्दावन, गोकुल, नन्दग्राम !

भूली कथाएं बन गये
मधु रजनी के
अननुभूत सुख असत्य,
जीर्ण इतिहास हो बिखरे
मानभंग के मनुहार भरे
प्रणय निवेदन यत्र तत्र !

नूतन पुरातन मे
रहा नहीं व्यवधान
समय की दूरी का न भान
क्षणों मे समाये
युग कल्प
स्मृति का तरल सरल वीचिमा
पल पल धो रहीं
धुंधले शिलातट
सुदूर व्यतीत जहां भासमान
नीला आसमान
सहज साक्ष्य बना
तना सिरों पर वितान !

नक्षत्र लोक मे
खो गईं नीहारिकाएं
प्रबुद्ध प्रकाशपिंड
छितरे असीम विस्तार मे
न गिनती, न उनका ज्ञान
कितने कहां थे ?
कहां गये महान ?
विलुप्त स्मृतियों मे
कहां रहा उनका स्थान ?

वियोगिनी

मौन के सन्नाटे में
रटा हुआ प्रेम का इतिहास
खो गया
घर के अँधेरे कक्ष में
मिलन संध्या
चली गई उदास ।

कितना सोचा था
कहने सुनने में
बीत जायगी सारी रात,
गिरा पगु,
कंठ रुद्ध हुआ
भूल गई अनकही बात ।

वे आये और चले गये,
ले गये अपने साथ
हाथों की मेंहदी,
पैरों का महावर,
मन के महोत्सव
अधरों की स्मिति अभवात !

छोड़ गए युग युग को
पैरों की उलझन,
प्राणों की घुटन,
हृदय की धड़कन,
भावों की हरकत,
आँखों की बरसात !



बच्चन कवि

'बच्चन' हिंदी के गायक कवि
उन्नायक कवि
मन्दिर में 'मधुशाला' लाये
'मधुबाला' लाये
साकी सागर प्याला लाये
हाला लाये
देवार्चन भूला,
अर्घ्य ढुला,
पथ में पंचामृत रहा पड़ा,
जन मानस उमड़ा
बेहाल विक्षुब्ध
'बच्चन' की कविता
का कुछ ऐसा नशा चढ़ा।

साहित्य पुजारी हुये सजग,
पड़े चिल्लाये 'हाय हाय'
विप्रों के मुख से कढ़ा शाप,
'बच्चन' की कविता सुरा किन्तु
सब रहे ढालते
बाल वृद्ध
सुबुद्धिप

पीकर मतवाले बने भ्रमित
अनुशासन शास्त्रों का टूटा
बह गया धर्म
बह गया कर्म
संयम छूटा
संगीत मुखर मधुशाला में।

मधुघट मधुशाला की हलचल
लाई जीवन में नये मोड़,
भावों में नूतन गति,
छन्दों में ऋजु परिणति,
थिरकन मन में,
सिहरन तन में,
वासना व्यथा से तप्त प्राण।
'बच्चन' की कविता ने
स्थापित किये
मूल्य नव, नये मान।

बच्चन' नवयुग के कवि,
नव पथ की छवि,
नवयौवन के उन्मत्त चरण,
लावण्य रूप रस के वाहक
अभिराम अपर
कर जिन्हें वरण
हो गई धन्य विश्रब्ध गिरा।



प्रतिदान

पाया नर ने अमित दान
तुम से प्रभुवर !
शुभ वरदान
तुम्हारे संकल्पित अधरों से ।
सागर सरिता गिरि कानन
तरु राजि शिखर, हिम शिलाखण्ड,
वीरुध-निकुंज,
घन तड़ित् ज्वार,
कुसुमित विगत,
मलयज बयार,
उच्छलित उरस,
झरझर निर्झर,
व्यापक झकोर छाया निसर्ग
रवि शशि नक्षत्रों-जड़ा नील नभ
उषा
तमिस्रा,
धूमिल सन्ध्या,
शस्य श्यामला धरा,
सवत्सा कामधेनु,
पक्षीकुल कलरव विपुल
जगत सृष्टि संकुल,
रोम रोम उस महादान से धन्य

[प्रतिवेदन के स

मुग्ध मन
प्राण पुलक परिपूर्ण
श्रद्धानत कृतकृत्य हृदय
तव चरण प्रान्त में पुन
समर्पित करता वह सब
जो तुमसे पाया था
ज्यों का त्यों—
अनबरता,
अनछुआ,
अननुलिप्त,
तुम उसको लो सहेज !

जो कुछ था तुम्हारा
उसीका लेने में तुम्हें
हो क्यों किसी विधि सकोच ?



उर्वशी और दिनकर

हो तुम कितनी प्यार भरी,
कितनी
मनुहार भरी हो तुम,
उर वश कर लेती हो
पल में, उर्वशी
द्वार की ओट खड़ी।

संध्या के सीमन्त चिकुर पर
बिन्दु,
पगों में पैंजनि नीरव
ओठों पर हिम हास,
सांस में सुरभि,
स्वच्छ विन्यास भरा उर।

तुम हो पूर्ण सकाम,
नाम पर नहीं तुम्हारा
लिखा, इन्हीं अधरों पर।
सुमुखि,
अप्सरसि,
सिमटी काया कंपित,
प्राण के आलिंगन में।

विपुल वक्ष से,
पृथुल नितम्बिनि,
हरती हो उत्तप्त विषम ज्वर ।

पुरूरवा नृप तुम्हें खोजता
छायावन में,
तुम करती छल,
ओढ़ चीर तारों का झिलमिल
मिल 'दिनकर' से ।



स्वप्न-साक्ष्य

मैं किशोर मनमुग्ध
अतुल तव रूप पवित्र मुकुल मृदु
पावप वेष्ठित,
प्रणय-लुब्ध मालिनी लताओं के
छायांचल में मध्याह्न
शांत शीतल सन्ध्या सा
हिम जल से धुलते
पुलिनों का पार्श्व
हरितवसना वसुन्धरा का निःस्वन स्वन
मुखर हो उठा था
तेरे मधुगीतों में छविशालिनि !

चकित
विभ्रमित
भूल ठगा सा
भव्य रूपनिधि मे तुमने !
मृग मन मेरा।
दूरस्थ हिम शिखर,
धन्य पवन,
हसों की पांतें,
कोकिल स्वर,
निर्झर का झरझर

प्रतुल लहरियों का कल कथन
साक्षी हैं यौवन सुमनवृन्त
यह अजर अमर क्षण
स्मृति के प्रांगण में
सब से पृथक
सुहावन भावन
स्वर्ण कलश सा
ऊर्ध्व शिखर में स्थापित ।

जीवन का लंबा पथ
कुहरा प्रकाश,
सुख दुख,
हर्षातप,
बीहड़ सुरम्य
जनपद खँडहर
किस किस में होकर चला नहीं,
किस राग रोष में गला नहीं ?

दिन पक्ष मास संवत्सर,
शत शत
कितने कैसे हो गये विगत !
रंगीन शिल्प
धूमिल छाया
माया का मोहावरण मंजु,
फट गया बादलों सा पल में ।

था उठा घटा सा घेर गगन
विद्युत, घन गर्जन
ऊर्म्मिल ज्वर
उत्तप्त हृत
हो गया शान्त
हो गया स्तब्ध
छा गई धुन्ध
अवरुद्ध दृष्टि
पुण्यायोजन
निसगत हिरण्य अर्क
प्रस्तुत करता स्वर्णाभा
मधुमय विगत मिलन की

हासविलास युक्त उस दिन की
टीस रह गई शेष,
वेश सब गया बदल
सब गया बदल
जीवन
यौवन
स्वर गीत
मीत मन
प्रीत यजन
घन गर्जन
कोप विसर्जन
प्राकृत अम्बर, अर्णव, अरण्यानि ।

उन भीगी पलकों मे
सोया है कोई स्मृति शिशु
स्पंदित जिसका वक्ष
छिपाए सनतों
बुनती प्यारों के कौशेय वसन।
खोलो, खोलो,
कह दो कुछ तो
सांसों का सित ससार सुमुखि,
यह वज्रलेख से अंकित गाथा
कोमल कुसुम सभुक्त प्रणय की।



चेतावनी

सिद्धान्त दो राष्ट्रों का
न माना परन्तु
भारत विभाजन कर लिया स्वीकार !
देश के अंग भंग के साथ
पन्द्रह अगस्त सन् सैंतालिस को
शुभ घड़ी पर
सत्ता हस्तान्तरण
स्वाधीनता का अवतरण
एक साथ हुआ परन्तु
सतलज, व्यास और झेलम में
गंगा, जमुना और संगम में
ब्रह्मपुत्र, सिन्धु-कर्दम में
कितना रक्त मज्जा बहा,
आई लज्जा को भी लज्जा अहा !

यह था हमारी स्वाधीनता का समारम्भ,
शेष रहा फिर भी दम्भ
दो राष्ट्रों के अस्वीकरण का !

[प्रतिवेदन के स्वर

सभ्य रूप,
सत्य रूप,
एक देश में से हुये उद्भूत
राष्ट्र दो,
ध्वज दो,
तन दो,
मन दो,
विचार दो,
मार्ग दो
विपरीत औ' विरोधी,
चिरशत्रुता निमग्न
कैसी सी विडम्बना !

कैसी गति,
कैसी मति,
शक्ति का अपव्यय,
जीवन का क्षय,
मानवता का विलय,
शांति के नाम पर
अशान्ति का बीज वपन !
विषम विष वृक्ष रोप
अमृतफल की आशा !

अब भी है समय,
न हुआ है अभी अस्त रवि
भारत के भाग्य का !
कश्मीर की वीणा पर
न छिड़ने दो युद्ध राग ।

हिमालय का सिंह द्वार,
सीमान्त के उस पार,
आग की लोहित पीत लपटों से
वेष्ठित रहा पुकार,
चेतो, चेतो, प्रहरी स्वतन्त्रता के,
मानवाधिकारों की रक्षा के कर्णधार !



चीन की मृत्यु पर

वियतनाम है नहीं,
कोरिया नहीं,
न तिब्बत,
लाओ भी यह नहीं,
नहीं यह ताइपेह है।
यह भारत है चीन!
कंस के हेतु चक्रधर कृष्ण।

मीठे मीठे भूल
तिक्त कटु का ले अनुभव।
लोहित, नेफा, लद्दाख
कब ये तीन
जहाँ चीन का नव
मिट्टी पाने को व्यग्र।

पक्षवाहिनी भारत की
है वचनबद्ध, देने को उसको युद्ध
कि जो
अनिमंत्रित और अवांछित
दुष्ट चरण
घुस आया सीमा में बलात्!

है जिसको शस्त्रों का गुमान,
है जिसको सेना का घमंड
है जिसको पशुबल पर आस्था
वह शलभ मात्र है दीपक का
अपने ही पखों का विनाश
करने को घिर घिर रहा घूम।

यह पूरब का आकाश लाल,
संदेश मृत्यु का लिये खड़ा
उस महाराष्ट्र का
जिसका यश गौरव विशाल
छाया था भू पर
इसी हेतु
था क्योंकि शांतिकामी वह,
बुद्धानुगामी वह,
आत्म स तुष्ट
विश्व संस्कृति में था जिसका मूर्धन्य स्थान
विस्तारवाद से न था उसे काम।

कम्युनिस्ट दीक्षा मे
भूल इष्ट
चल पड़ा अनिष्ट पथ,
स्वार्थ,
स्वार्थ ही रह गया उसे इष्ट
दूर दृष्टि होगई विनष्ट
हुआ अ धा यह
सृष्टि सचयना के हेतु बना संकट।

उसका मरण पर्व
मना रहा है विश्व आज,
उभय शक्ति गुटों में
उसके निधन पर
मधुपान करने को
प्राप्त नहीं कोई शोक,
शोक, शोक, महाशोक !



सेना की हुंकार

कैलास वास शिवशंकर का
हम उस पर अर्घ्य चढ़ायेंगे ।
हम सेनानी हैं भारत के
गिरि शृंगों से टकरायेंगे ।
है कौन शक्ति भूमंडल पर
जो पथ में बाधा खड़ी करे ।
उस पार हिमालय के बढ़कर
हम राष्ट्रध्वज फहरायेंगे ।

उस चीन चीन का हमें न भय
जब रणभेरी बज उठी यहाँ ।
प्रचंड तूफानों में निधड़क
हम हिम शिखरों पर धायेंगे ।
हट जाओ मेघ हिमालय के,
रस्ता दो ब्रह्म पुत्र गंगा !
तिब्बत की निर्मम हत्या का
बदला अब आज चुकायेंगे ।
होगई समाधि भंग शिव की
माओ चाओ के कृत्यों से ।
अग्निस्फुलिंग से वज्रों के
हम उनके उर दहलायेंगे ।



हिन्द की सेना

'विजय सत्य की जय भारत की'—
अंतरिक्ष हिल उठा घोष से।
आततायियों के जुल्मों पर
जनमानस घिर उठा रोष से।
घर घर कढ़ कढ़ बढ़ चले युवक
बस एक लक्ष्य लेकर आगे।
इन मानवता के घोर शत्रुओं
को न मिले रास्ता भागे।
गोले गोली बन्दूकों से
भय हमें न, वज्र हमारे उर।
हम आजादी के दीवाने फिर
हमें भेड़ियों से क्या डर ?
वध घृणित करने का रिपु का
दृढ़ व्रत हमने ठान लिया।
हिम शिखरों के पार हिन्द की
सेना ने अभियान किया।
मुक्तिवाहिनी भारत की चल
पड़ी खोलने को बंधन।
त्रस्त ग्रस्त जनजन विमुक्त हो
सभी हमारा सफल यजन।



भारत एक परिचय

खड़े किये साम्राज्य न हमने
साक्षी है इतिहास जगत का ।
बाँटी मुक्ति सदा जन जन को
वितरित किया प्रसाद सुगत का ।

सह अस्तित्व लक्ष्य था अपना
जियो और जीने दो जग को ।
स्वेच्छा से विकसित हो जीवन
खुला मिले नभ का पथ खग को ।

नर क्या कीट पतंगों तक की
इच्छाओं को मान दिया है ।
कभी शस्त्र बल का न भूलकर
हमने कुछ अभिमान किया है ।

सत्य अहिंसा के धागे का
दृढ़तम रक्षाबंधन अपना ।
जीवन का व्यापार बन गया
शेष जगत को था जो सपना ।

आज मुक्ति कामी भारत की
कठिन परीक्षा का दिन आया।
भूल युद्ध की शिक्षाओं को
चीन हिमालय पर चढ़ आया।

जिसे मुक्ति का मूल्य प्राण से
भी बढ़कर प्यारा है।
उसे शस्त्र का नहीं, शास्त्रों
का ही डर सारा है।

पंचशील का प्रस्तोता
पंचाग्नि भीत मत जानो।
पांचजन्य के विजय घोष
में भारत को पहचानो।



रणांगण मे

भला चीन को क्या बिसात
जो भारत को ललकारे ।
सह्याचल क्रुद्ध नहीं आत्म-
बल जहाँ प्रचंड प्रहारे ।

झुके हिमालय चाहे भारत
अविचल किंतु खड़ा है ।
आज़ादी का ध्वज प्रतीक
शिखरों पर अटल गड़ा है ।

तुंग श्रृंग साक्षी वीरों के
मतवाले जौहर के ।
एक एक ने मारे दस दस
बाँके वीर समर के ।

कथा लिखी है चट्टानों मे
गहन गंभीर दर्रों में ।
बहा रक्त है जहाँ उष्ण उन
खड्डों घोर घनों में ।

चलो चलो चलकर देखो
रण-कौशल निज वीरों का।
पल पल साका किया, दुखाया
धैर्य समर वीरों का।

भागे हुए शत्रु टिड्डीदल
साखी सदा रहेंगे।
कथा जवानों के विक्रम की
युग युग प्रबल कहेंगे।



स्वागत, युद्ध !

संग्राम द्वार पर आया, स्वागत तेरा।
आगत को हमने विमुख न घर से फेरा।
हमें अतिथि सत्कार स्वयं करना है।
परिणाम घोर से नहीं तनिक डरना है।

यद्यपि हम सतत शान्ति-पथ के हामी।
पर अत्याचार समक्ष न युद्ध विरामी।
हम ललकारों से भीत न होने वाले।
हम कालसर्प का दर्प कुचलने वाले।

टैंकस संगीनों को सीनों पर सहना।
है खेल हमारे लिए आग पर बहना।
गोले गोली बम वर्षा मे दृढ़ रहना।
है पाप युद्ध मे मुँह से 'उफ' तक कहना।

रण भिक्षा देना धर्म हमारा प्यारा।
औ' शिरच्छेद जिसने बढ़कर ललकारा।
गिरिशृंगों को पग की ठोकर से ढहना।
बढ़ते चलना नित हृदय शत्रु का दहना।

आओ कर लो दो हाथ न फिर पछताओ।
अब कैसा युद्ध विराम, सोच क्या लाओ।
राष्ट्रों का समर रक्तकुण्ड हो सिरता।
विध्वंस पक्ष चल पड़ा न पीछे फिरता।



स्वर्ग का आदर्श

उपचुनाव आयोजन
वर्षा से धुला
नील निमल गगन
अमा निशा का घोर तिमिरावरण
असंख्यासंख्य तारों की झिलमिल सभा म
चल रहा प्रचार अभियान उग्र
आकाशगंगा के उभय पुलिन पर
अमर ज्योतिपुंजों के लोक मे
निर्वाचन का उत्सव
गाली गलौज विहीन
लोकतन्त्री पद्धति पर
रजत रश्मियों के माध्यम से
हो रहा मत दान,
संध्या से विहान।

शुभ्र शान्त वातावरण
जनवाद
व्यष्टि औ' समष्टिवाद
और और कई वाद
उतरे उपचुनाव में परन्तु
निम्न स्तर का न यहाँ विवाद।

कृपलानी औं' मसानी यहां
लोहिया हैं पर तु वह तुर्शी बेमानी यहां।
जनविरोधी कार्यक्रमों में लग्न
मिथ्याचारी कहां यहां ?

उल्काओं के लोक में
क्रांति चक्र
दुरभिसन्धि बिना
घूमता है सतत
लाता है
परिवर्तन, विवर्तन
नवालोक
सहज सौम्य पथ से।

इतना ही अ तर है
मर्त्य और स्वर्ग में
पृथ्वी का जीवन
बँधा है मृत्यु स्वार्थ से,
स्वर्ग में अमरता का
शुभादर्श रक्षित है।

दल दल में डूबा
लोकतन्त्र का जो स्वर्ण रथ
चक्र की अराएं धँसी जा रही हैं कर्दम में
उनके हेतु प्रेरणा का पु ज
कहीं और नहीं।
ऊर्ध्व दृष्टि करो
और देखो वह अपूर्व दृश्य
दिपो यही धारणी।

मानवता के उद्धार का पथ
होगा प्रशस्त ।
अन्तरिक्ष का सदाचरण
करो धरती पर धरण ।
सत्य जीवन,
असत्य मरण !



हेमरशोल्ड !

युग कल्प सीम त पर सौभाग्य बि दु
महामानव हेमरशोल्ड !
मृत भी तुम हो अमर
सुरभित दिग त
श्वासोच्छ्वास से तुम्हारी सौम्य !

विश्व जनसेवा का महान व्रत
तुमने निभाया, होम प्राण
आहुति दे किया सफल
जीवन का भव्य मिशन ।
किया विफल
विश्वशा ति के अहेरियों का
नि दित प्रयास ।

तुम ध न्य, ध य धरा पूत,
जाया तुम सा सपूत
पुण्य प्राण हेमरशोल्ड
धरती आकाश
अ तरिक्ष अभियान के तुम्हारे
हैं साक्षी सभी
पुच्छक्रियों ने मिटा दिये हों
चाहे समस्त चि ह ।

[प्रतिवेदन मे स्व

पोंछ दिया हो पावन रक्त
रोती बिलखती उस रजनी के अंचल से
ध्वस्त हो बिखरा जहाँ
वायुयान तव महामना ।

मिल रहा ठौर नहीं आज
उस सौम्य को,
फाँक रहा धूल वह
दर दर की मर्माहत
लांछित, उपेक्षित,
विमर्दित,— अमार्जित पाप
उसे खा रहा है तिल तिल ।

मचलती मक्खियों से
उड़ गये पतित दुष्ट,
षड्यन्त्री,
शून्य साथ साथ रंगमंच
केवल हो शेष तुम्हीं
देवोपम परम पुरुष !

आरती उतारतीं दिग्वधुएँ,
तुम्हारी नित्य
क्षण क्षण पूजित
मनुष्यता के प्रांगण में
अपूर्व व्यक्तित्व वह
धारण कर शांति रश्मियों का वर रत्नमुकुट ।

र है अंधेर नहीं
दुनियां मे,
मिलता है फल अवश्य
शुभाशुभ कर्मों का,
ईसा मर कर भी रहते अमर
जीकर भी नरपशु होते हैं नि शेष किन्तु !



गुटर गूँ

जोड़ा कबूतरों का
'गुटर गूँ' करता
उतर आया
घर के पिछवाड़े
बबूल की छाया तले
किरण पस्त शिथिल
डूबते नक्षत्रों सा।

कला विज्ञान के किशोर छात्र
मूक स्तब्ध,
वाग्मिता पराजिता—
'कौनसी जबान
अहलेवतन !
अन्तर्राष्ट्रीय अंग्रेजी तो न है कदापि
संस्कृत, नहीं नहीं
जर्मन, फ्रेन्च, रशियन, नहीं नहीं
उर्दू, पर्शियन, अरबी, नहीं नहीं
तमिल, तेलगू, बंगला, हिन्दी, नहीं नहीं
कौन सब भाषा विहग ?
कौन स्वर ध्वनित खग,
ताल पर जिसकी है नृत्यशील रोम रोम ?'

'समझ सकोगे भला
भाषा भणिति यह ?
सर्वांग पूर्ण है, समर्थ
ज्ञान विज्ञान के सूक्ष्म तत्त्व
इतिहास पुराण का सत्य
इसमें प्रकट,
शास्त्र शेष नहीं कोई एक
मर्म जिसका न हो सके व्यक्त
स्वराष्ट्र की सांस्कृतिक सम्पदा
अक्षयकोष
भावों औ विचारों का
रक्षित है इस अमूल्य रत्नागार में ।

'तुम बेचारे
राष्ट्रचेतना विहीन
भावात्मक एकता का स्वप्न लिये डोलते
संशय की तुला पर निज भाषाओं को तोलते
आत्मविश्वासहीन
अकिंचन, अज्ञ, दीन
राष्ट्रभाषा की बात तुम्हें
शोभा नहीं देती बंधु !

'बोल के झपट्टे में
जीवन का व्यापार
चलेगा कुछ ही दिन ।
ढोते आये भार परायी भाषाओं का
सदियों से, मत करो बात

[प्रतिवेदन मे स्वर

संस्कृति की
संस्कारों से जो ओतप्रोत
जिसमें रहते युग-धर्म निहित
युग कर्म विहित जो
प्राणवान,
जो जीवन की व्याख्या
समाज का दर्पण,
जिसमें रूप सुन्दर
अतीत के शौर्य पराक्रम का पावन।

'छोड़ो, छोड़ो यह चर्चा
चर्चा करो
मृत्तिका के ढेलों की।
रत्नमूर्ति के चरणों में
विश्राम प्राप्ति सौभाग्य
भाग्य में नहीं तुम्हारे तात!
बात यह निश्चित।'

उड़ गये कबूतर युग्म खोल पर
नभ में, दूर दूर अति दूर!
'गुटरगूं' लयहीन स्वर गुंजित।
मूक स्तब्ध सुधीजन, छात्र चकित,
विस्मित जन मन, विस्फारित नयन पवन।



कैनेडी के निधन पर

कौन हत्यारा तुम्हारा
कर गया तुमको अमर,
तुमको दुलारा विश्व का ?

वन्दना का अर्घ्य
श्रद्धा का नमन
स्मृति में तुम्हारी
बरसा करेंगे शत सहस्र संवत्सर !
ओ महाप्राण सौम्य कनेडी !
लिंकन से लिंक जुड़ा जिनकी परंपरा का।

उस अभागे को न था ज्ञान,
न अपने दुष्कृत्य का अनुमान,
अन्यथा विश्व सौमनस्य की हत्या का दुर्वह भार
तुम पर फायर कर
वहन वह करता न कदापि।
तथ्य यह सुनिश्चित है
आज जब विश्व के महान राष्ट्र
संशय और संदेहों से जर्जरित
शस्त्रीकरण के बोझ से आक्रान्त,
विनाश के कगार पर,
चिंतित भ्रू कुंचित
विचारमग्न वक्तव्यमूढ़ खड़े।

दासता का मुखौटा
होगया उसका व्यर्थ ।
मिटाने के प्रयास में
तुम्हें देगया अविनश्वरता का वरदान
उस भाग्यहीन नराधम का पक्षपात ।
गांधी मन्वन्तर,
इने गिने प्रथमकोटि नररत्नों की माला में
तुम्हें स्थापित कर होगये कृतकृत्य ।

अपूर्व आश्चर्य !
ईर्ष्या द्वेषपूर्ण जग में हठात्
प्रस्तुत हुआ तुम्हारे अवसान से
अद्भुत मैत्री भाव,
व्याप्त हुई एक समवेदना
शत्रु मित्र में समान !
किया अश्रुमोचन द्वि लोचन ने वसुधा के ।

एक-साथ उभय पक्ष
चढ़ा रहे श्रद्धा सुमन
पुण्य स्मृति को तुम्हारी
अनुक्षण, हे अखंड ज्योति !

"वातायन" पाक्षिक
५, डाग बी- ानेर

● ●

कवि को काव्य इष्ट
काव्यालोचन की हो क्यों उसे चाह ?
सत्यशोध का पथिक
मनीषी कवि
बहुधा रहता अव्यक्त
विषय वस्तु के पीछे
गोपित भावों और विचारों की छाया में ।
प्रायः सुन्दरतम गीतियाँ
न गाई जातीं कवि कंठों से ।
वे रहतीं चिर मौन
अमुद्रित
देख न पातीं वे प्रकाश दिनमणि का ।
कोलाहल साहित्य हाट का
करता उनको विवश,
आत्मगोपन का अपनातीं वे मार्ग
सहज सीधा-ऋजु मन्थर ।

जब काल की धुंध
छिपा लेती स्वप्निल रमणीय हृदय जगती को ।
कवि कुहरे में हो जाता ओझल,
विस्मृति में विराम
अभिराम अभीप्सित ।
कीर्ति कामना ठगे उसे क्यों
वीणावादिनि के चरणों में
जिसका वाणीनाद समर्पित ।
विजय पराजय अनपेक्षित है
गीतों में खोया रहता कवि ।

